समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ५

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ नवम्बर २०१३ ● वर्ष : १७ ● अंक : ०५ (निरंतर अंक : १९७)

मासिक समाचार पत्र

मीडिया नैतिकता के मानकों का पालन करे : राष्ट्रपति (पृष्ठ १५)

संत श्री आशारामजी बापू पर किया गया केस झूठा है । लड़की की कहानी विश्वास करने योग्य नहीं है ।

- सुप्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता एवं न्यायविद् श्री राम जेठमलानी

संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं । आनेवाले समय में रेप का आरोप लगानेवाली महिलाओं का सच सामने आ जायेगा ।

- श्री अशोक सिंहल, अंतर्राष्ट्रीय संरक्षक, वि.हि.प.

सरकार और प्रशासन को निश्चित रूप से पुनर्विचार करना चाहिए

- स्वामी ज्ञानानंदजी महाराज (पृष्ठ ६)

मुस्लिम समाज भी बापूजी का बहुत आदर करता है

- हसन साहब (पृष्ठ ७)

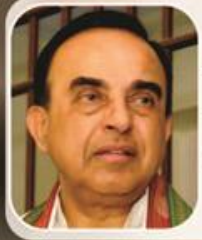

"धर्मांतरण कार्यों का प्रतिरोध करने में संत आशारामजी बापू सबसे आगे हैं । उनके खिलाफ किया गया केस पूरी तरह बोगस है । मेरे कानूनी सलाहकारों का यह फैसला है ।"

- प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी

निश्चिंत, निर्भीक निष्कलंक बापू

सरलता-सज्जनता की मूर्ति, लाखों-करोड़ों की माँ लक्ष्मीदेवीजी के उद्गार

(पृष्ठ १०)

जागो ! भारतवासियो जागो !!

भारत में संतों के खिलाफ षड्यंत्र क्यों ?

शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी

आरोप – हत्या। नवम्बर २००४ में हिरासत में लिये गये।

परिणाम – आरोप निराधार निकला।

स्वामी केशवानंदजी महाराज

आरोप – बलात्कार।

परिणाम – १२ साल की सजा में से इन्होंने ७ साल सजा भोगी। सच्चाई सामने आयी, तब इन्हें निर्दोष घोषित करके रिहा किया गया।

महामंडलेश्वर परमहंस श्री नित्यानंदजी महाराज

आरोप – बलात्कार, अभिनेत्री के साथ अश्लील सीडी। २१ अप्रैल २०१० को हिरासत में लिये गये।

परिणाम – कथित सीडी फर्जी निकली। 'स्टार विजय' और 'आज तक' न्यूज चैनलों को स्वामी नित्यानंदजी महाराज के प्रति माफीनामा प्रसारित करना पड़ा।

जगद्गुरु कृपालुजी महाराज

आरोप – ८५ वर्ष की उम्र में मई २००७ में त्रिनीदाद देश में एक २२ साल की युवती के साथ बलात्कार का आरोप।

परिणाम – आरोप निराधार निकला।

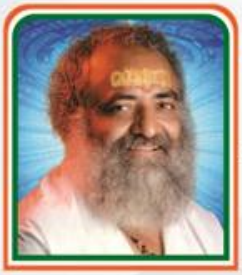

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

आरोप – आश्रम में तांत्रिक प्रयोग आदि आरोप

परिणाम – सीआईडी एवं सर्वोच्च न्यायालय द्वारा क्लीन चिट।

अब चारित्रिक आरोपों की साजिश, जिसके पर्दाफाश हेतु पढ़े 'ऋषि प्रसाद', 'लोक कल्याण सेतु' के सितम्बर के आगे के अंक एवं 'सच' पुस्तक।

"साधु-संतों के बारे में अनेक आरोप लगाने की परम्परा देश में तेज हुई है। आपने किसी मौलवी पर, क्रिश्चियन पादरी पर आरोप लगाते हुए देखा है ? और आशारामजी बापू का जीवन तो बहुत सात्त्विक संत का जीवन है।"

– डॉ. प्रवीण तोगड़िया, अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, वि.हि.प.

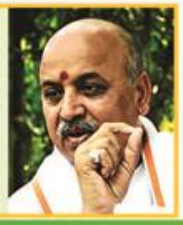

लोक कल्याण सेतु
मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १७ अंक : ०५

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : १९७)

प्रकाशन दिनांक : १५ नवम्बर २०१३ मूल्य : ₹ ५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी

प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५० (३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★ e-mail : lokkalyansetu@ashram.org ⁂ ashramindia@ashram.org

★ web-site : www.lokkalyansetu.org ⁂ www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS — रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

care WORLD — रोज सुबह ७-०० बजे

मंगलमय चैनल — www.ashram.org पर उपलब्ध

इस अंक में...

- दृढ़व्रती को कोई हिला नहीं सकता ३
- बापूजी सभीका भला ही सोचते हैं ४
- हिन्दुत्व पूरे विश्व को बचाने के लिए जरूरी है ४
- २१० प्रतिशत बोगस केस का आरोप-पत्र ५
- हमारा 'ओजस्वी पार्टी' से कोई लेना-देना नहीं है ५
- पूज्य बापूजी बहुत जल्दी ही निर्दोष बरी होंगे ६
- करोड़ों लोगों की बात अनदेखी नहीं करनी चाहिए ६
- मुस्लिम समाज भी बापूजी का बहुत आदर करता है ६
- सरलता-सज्जनता की मूर्ति, लाखों-करोड़ों की माँ लक्ष्मीदेवीजी के उद्‌गार ७
- पकड़ा गया ब्रजबिहारी उर्फ ठग भोलानंद ८
- गहरी साजिश के तहत सेवादारों को फँसाया गया ९
- मीडिया का अतिरेक १०
- मीडिया नैतिकता के मानकों का पालन करे : राष्ट्रपति ११
- एन.बी.एस.ए. ने 'इंडिया टीवी' को लगायी कड़ी फटकार ११
- होमियो तुलसी गोलियाँ ११
- घरेलू सात्त्विक शिशु आहार (बेबीफूड) १२
- दिमागी ताकत व तरावट लानेवाला योग १२
- आशारामजी बापू जैसे संतों को ही क्यों फँसाया जाता है ? १३
- हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश १३
- जोधपुर जेल के बाहर मनायी गयी अनोखी दिवाली ! १४
- कसौटियों से घबरायें नहीं १४

दृढ़व्रती को कोई हिला नहीं सकता

– पूज्य बापूजी

जिसको सचमुच ईश्वरप्राप्ति करनी है उसको कोई हिला नहीं सकता। वह नियम-निष्ठा में तत्पर होगा व दृढ़व्रती होगा। उसको सेवाकार्यों में रुचि रहेगी, वह खूब तत्परता से सेवा करेगा।

साधक ऐसा चाहिए जैसा बन का सिंह।

जैसा जंगल का शेर, ऐसा ही वह निर्भीक नारायण के रास्ते जाता है। ईश्वर को पाना है तो पाना है, बात पूरी हो गयी। उसको पाये बिना हजारों-लाखों-करोड़ों जन्म झख मारो, कुछ मिलनेवाला नहीं, कुछ टिकनेवाला नहीं। ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा। जो दृढ़ता से निश्चय कर लेता है कि मुझे ईश्वर को पाना ही है, उसके लिए संसार-सागर तरना गाय के खुर को लाँघने के बराबर है और जिस अभागे का ईश्वरप्राप्ति का निश्चय दृढ़ नहीं है, उसके लिए तो संसार बड़ा सागर है। जिसको मनुष्य-जन्म का मूल्य पता है वह किसीसे द्वेष नहीं रखेगा। अगर द्वेष रखता है तो घाटे में ही पड़ जाता है। द्वेष जिसके हृदय में रहता है उसके हृदय में भगवत्प्रकाश नहीं हो सकता।

तो किसीके लिए हृदय में द्वेष रखना अपने हृदय को मलिन करना है। अगर ईश्वर के लिए आकर्षण महत्त्वपूर्ण लगेगा तो यह सारा कचरा निकल जायेगा पर ईश्वर के लिए महत्त्व नहीं है न ! ईश्वर महत्त्वपूर्ण नहीं लगते हैं तो फिर कोई अपना, कोई पराया... किसीसे राग, किसीसे द्वेष... कोई भय, कोई शोक तो कोई चिंता... बस, जैसे मक्खन निकालने के लिए मथनी से दही मथते रहते हैं, ऐसे ही आदमी का जीवन इनसे मथ जाता है। इसमें मक्खन तो क्या निकलता है बुलबुले ही निकलते हैं, और कुछ नहीं ! तो क्या करें, कि बार-बार प्रीतिपूर्वक भगवान का चिंतन करो। राग में, द्वेष में, निंदा में, चुगली में समय को व्यर्थ न गँवाओ। इससे बड़ी हानि होती है। साध्य को पाने का लक्ष्य बनाओ। कुल मिलाकर ईश्वरप्राप्ति का दृढ़ संकल्प करो।

जैसे बार-बार निंदा करने से पाप बढ़ जाते हैं तो अशांति बढ़ जाती है, ऐसे ही बार-बार जप-ध्यान करने से पाप नष्ट होकर पुण्य बढ़ते हैं तो आनंद आ जाता है। बार-बार पुण्य होता है तो हृदय खिला रहता है और बार-बार द्वेष होता है तो हृदय चिंता-तनाव में रहता है। किसीका बुरा सोचो नहीं, किसीका बुरा चाहो नहीं, किसीका बुरा करो नहीं और **अपने को भगवान से पृथक्, दूर, तुच्छ मानो नहीं।** दृढ़तापूर्वक साधना में लग जाओ कि 'मुझे इसी जन्म में भगवान को पाना है, जीवन्मुक्ति का आनंद लेना है। हर परिस्थिति में सम रहना है।'

बापूजी सभीका भला ही सोचते हैं

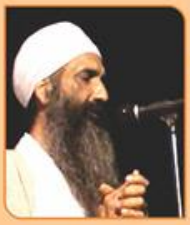

– संत बाबा हरपाल सिंहजी
प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा

पूज्य बापूजी सभीका हर तरह से भला ही सोचते हैं, किसीका बुरा नहीं सोचते। परंतु ऐसे संत की जो निंदा करते हैं :

संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार।
साध का निंदकु कैसे तरै।
सरपर जानहु नरक ही परै।

हमारे साथ हमारे दिलों में बापूजी के लिए प्यार है। यह बात सभी जानते हैं कि षड्यंत्र हो रहे हैं और ऐसे समय में जो भी कर्तव्य हो वह पूरा करने को हम तैयार हैं।

हिन्दुत्व पूरे विश्व को बचाने के लिए जरूरी है

- १००८ महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरिजी महाराज, पंचायती अखाड़ा एवं निरंजनी अखाड़ा

अदालत में और वैसे भी एक नैतिक विधान है कि जब तक यह निश्चय न हो जाय कि किसी व्यक्ति ने सचमुच गलती की है, तब तक उसे गलत कहने का अधिकार किसीको नहीं है। लेकिन पूज्य बापूजी के प्रकरण में मीडिया जिसका काम केवल निरपेक्ष भाव से समाज को सूचना देना है, वह योजना के तहत स्वयं की भावनाएँ विपरीत रख के अधिक-से-अधिक नकारात्मक सूचनाओं को बनाकर अतिरंजित तरीके से पेश करने का प्रयास कर रहा है। मैं इसे सामाजिक नैतिकता के हिसाब से बिल्कुल अनर्गल और गलत मानता हूँ। मीडिया के द्वारा इतना नकारात्मक अतिरंजन बापूजी जैसे वयोवृद्ध संत के लिए मैं अच्छा नहीं मानता हूँ। मीडिया को ऐसा नहीं करना चाहिए।

दूसरी बात कि भारत का हर व्यक्ति आज यह सोचने को मजबूर हो गया है, खास तौर पर हिन्दू समाज कि किस प्रकार से हिन्दू समाज के प्रति, हिन्दू संस्कृति व परम्पराओं के प्रति लोगों में वितृष्णा व अश्रद्धा पैदा हो जाय - इस पर कोई टोली इस देश में संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। तभी मीडिया के सामने कोई भी नकारात्मक बिंदु आता है तो वह उसको अत्यधिक अतिरंजित करके प्रकट करना चाहता है ताकि उसके माध्यम से हिन्दू समाज में इन सभी बातों के प्रति नकारात्मक भावना पैदा की जा सके। इस पर सारे समाज को तटस्थ होकर विचार करना चाहिए क्योंकि समाज में यदि इस प्रकार से इतने बड़े धर्म के प्रति अश्रद्धा की स्थिति पैदा होती है तो यह समाज के लिए घातक है। हिन्दुत्व केवल हिन्दू को बचाने के लिए नहीं, यह पूरे विश्व को बचाने के लिए जरूरी है। अतः मीडिया केवल सूचनाएँ दे और यदि कोई जानबूझकर षड्यंत्रपूर्वक इस तरह की स्थितियाँ पैदा कर रहा है तो जाँच-पड़ताल करके उसे भी दंडित करना चाहिए।

२१० प्रतिशत बोगस केस का आरोप-पत्र

दिनांक ६-११-२०१३ को जोधपुर सत्र न्यायालय में पुलिस द्वारा निर्दोष पूज्य बापूजी व अन्य सेवादारों के खिलाफ आरोप-पत्र दाखिल किया गया । आरोप-पत्र में पूज्य बापूजी सहित शिवा भाई, शरदचन्द्र भाई, प्रकाश भाई तथा शिल्पी बहन को आरोपी बनाया गया है । मूल आरोप-पत्र १५ पृष्ठों का है, जिसमें उत्तर प्रदेश की लड़की को मोहरा बनाकर उसके द्वारा गढ़वायी गयी एकदम झूठी व मनगढ़ंत कहानी के वाहियात आरोपों का उल्लेख है । आरोप-पत्र के साथ ५८ गवाहों के बयान जोड़े गये हैं । इसमें अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, राहुल सचान, अजय कुमार जैसे लोगों को भी गवाह बनाया गया है, जो अपराधी प्रवृत्ति के हैं और इनके काले कारनामों की सच्चाई आप 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, अक्टूबर २०१३ के पृष्ठ ६ से ९ एवं नवम्बर २०१३ के पृष्ठ २५ व २६ पर पढ़ सकते हैं । इनके अलावा आरोप-पत्र में कई गवाह ऐसे भी हैं जिन्होंने पूज्य बापूजी व आश्रम के पक्ष में बयान दिये हैं।

पुलिस द्वारा न्यायालय में पेश किया गया आरोप-पत्र कितना बेबुनियाद है एवं इसमें लिखे गये तथ्यों को पुलिस अधिकारियों ने कितना जाँचा है यह अपने-आपमें एक बड़ा सवाल है । क्योंकि आरोप-पत्र में शिल्पी बहन का लिंग 'पुरुष' लिखा गया है।

एफआईआर के आधार पर दिल्ली पुलिस ने नये कानून का दुरुपयोग करते हुए ८ धाराएँ लगायी थीं । उसके बाद जोधपुर पुलिस ने नये कानून का और भी तीव्रता से दुरुपयोग किया और अन्य धाराओं को भी आरोप-पत्र में लगा दिया, जिससे यह साबित किया जा सके कि आश्रम में सेक्स रैकेट चलता है।

पुलिस द्वारा आरोप-पत्र में चाहे जो भी धाराएँ लगा दी गयी हों लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आरोप-पत्र कोई न्यायाधीश का फैसला नहीं होता । यह तो मात्र कानूनी प्रकिया का एक हिस्सा है जो कि हर मामले में पुलिस के द्वारा बनाया जाता है । लेकिन जब न्यायालय में सबूत रखने की बात आती है, सच्चाई तो उस समय सामने आती है । आरोप-पत्र में जो धाराएँ लगायी गयी हैं, उनके संदर्भ में क्या-क्या बनावटी सबूत खड़े किये गये हैं और किन-किन लोगों पर दबाव डालकर झूठे बयान लिये गये हैं - ये सब बातें न्यायालय के सामने स्पष्ट हो जायेंगी।

न्यायालय से जाते समय पूर्णतः निर्दोष पूज्य बापूजी ने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा : ''आरोप २१० प्रतिशत बोगस हैं, बनावटी हैं, आरोप (सच्चे) हैं ही नहीं तो स्वीकार क्या करना !''

हम सभी रोज संकल्प करें कि 'हमारे निर्दोष पूज्य बापूजी पर लगे ये झूठे मुकदमे जल्द-से-जल्द खारिज हों और बापूजी निर्दोष रिहा हों।'

हमारा 'ओजस्वी पार्टी' से कोई लेना-देना नहीं है

– पूज्य बापूजी

''यह जो 'ओजस्वी पार्टी' चल पड़ी है, इसमें भ्रमित नहीं होना कोई भी । इसकी कोई ठोस बुनियाद भी नहीं है और न होनेवाली है, न हम सहमति देते हैं । कोई सोचते हैं, बापू की पार्टी है लेकिन हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं है।''

देखिये विडियो इस लिंक पर :

https://www.youtube.com/watch?v=xQJfHz0OVDo

झूठी खबरों से सावधान !

पिछले कुछ दिनों से लोगों को गुमराह करने व उनकी आस्था तोड़ने के लिए षड्यंत्रकारियों तथा कई मीडियावालों द्वारा तरह-तरह के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। हाल ही में फरीदाबाद, महोबा तथा मैनपुरी आश्रमों में अवैध जमीनों के कब्जे की झूठी खबरें दिखायी गयीं जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसा कोई कब्जा है ही नहीं। वहाँ की स्थानीय समिति और आश्रम से प्राप्त जानकारी के अनुसार इन सभी आश्रमों की जमीनों के कागजात उनके पास मौजूद हैं। मेहसाणा आश्रम (गुज.) में व्यासपीठ के नीचे प्रसाद रखने और ध्यान-भजन करने की जगह को तहखाना बताकर लोगों को गुमराह किया गया।

इस प्रकार सच्चाई से परे ऐसी कई बिना सिर-पैर की खबरें प्रचारित कर अफरातफरी का माहौल पैदा करने के दुष्प्रयत्न किये जा रहे हैं। अतः जागरूक जनता ऐसी बेबुनियाद खबरों से सावधान रहे ! इससे पहले भी कुछ अन्य आश्रमों के बारे में इस प्रकार की झूठी खबरें उछाली गयी थीं, जिनकी हकीकत आप नवम्बर २०१३ के 'ऋषि प्रसाद' के पृष्ठ ३० पर पढ़ सकते हैं।

हम बापूजी को पूरा सहयोग करेंगे

– विजय पंडित, विधायक
इंडियन नेशनल लोकदल, दिल्ली

जो भी यह अधिकांश मीडिया में चल रहा है, वह सब पैसे से है। कई न्यूजवाले बापूजी के पीछे पड़े हुए हैं। 'देश में क्या हो रहा है ? घोटाले क्यों हो रहे हैं ? विकास क्यों नहीं हो रहा ?...' वे यह सब छोड़े हुए हैं। केवल बापू पर लगे आरोप लेकर अपना चैनल चला रहे हैं जबकि यह सारा केस पूरी तरह से झूठ पर आधारित है।

पूज्य बापूजी की धर्मपत्नी और बेटी पर भी जो आरोप लगाये गये हैं, वे सब बकवास और सरासर झूठे हैं। यह जो योजना बनायी है इसको आप छोटी-मोटी योजना मत समझें, बहुत बड़े-बड़े लोग इसमें शामिल हैं।

हम अपने क्षेत्र की तरफ से बापूजी को पूरा सहयोग करेंगे। एक और बात कि लोग अपनी आँखों से देखें, दूसरे की न सुनें। जब तक अपनी आँखों से देखा नहीं, उस पर आप विश्वास कैसे कर सकते हैं ? यह तो भेड़चाल हो गयी ! यह सारी सोची-समझी साजिश है। लोग जो टीवी देखते हैं मेरा उनसे अनुरोध है कि इस बकवास पर थोड़ा भी विश्वास न करें।

सरकार और प्रशासन को निश्चित रूप से पुनर्विचार करना चाहिए

– स्वामी ज्ञानानंदजी महाराज

भारतीय संस्कृति बहुत-से विदेशी आक्रमणों के पश्चात् भी पूरे विश्व की प्रेरणास्रोत बनी हुई है। इसके पीछे निश्चित और निःसंदेह ही संतों का त्याग और तप है। लेकिन भारत में कुछ समय से हमारी संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति कुठाराघात की स्थितियाँ और उसी क्रम में संतों के प्रति भी जिस ढंग से वातावरण बनाया जा रहा है, इससे पूरे समाज में एक प्रश्नचिह्न खड़ा हो रहा है। यह निश्चित रूप से अनुचित है, सरकार व मीडिया को किसी भी स्थिति में एकपक्षीय नहीं होना चाहिए। खुले चिंतन के साथ विचारपूर्वक हर स्थिति को देख के सरकार व मीडिया को समाज के सामने एक सकारात्मक सोच व पक्ष रखना चाहिए, जिससे समाज की अपनी संस्कृति के प्रति आस्था बढ़े।

आशारामजी बापू के प्रति जो यह वातावरण बहुत दिनों से बना हुआ है और दिन-प्रतिदिन इसे और अधिक उछाला जा रहा है, यह किसी भी दृष्टि से न राष्ट्रहित में है, न समाजहित में और न ही आस्तिकता के हित में है। सरकार और प्रशासन को निश्चित रूप से इसमें पुनर्विचार करना चाहिए।

पूज्य बापूजी बहुत जल्दी ही निर्दोष बरी होंगे

– संत कृपारामजी महाराज, गुरुकृपा आश्रम, जोधपुर

संत श्री आशारामजी बापू इस देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने पूरी दुनिया को संयम, सदाचार का संदेश दिया है। दुनियाभर के युवावर्ग ने उनके मार्गदर्शन से सही दिशा प्राप्त की है। पूज्य बापूजी ने देश के लोगों को जगाया है, युवाओं की अंतःचेतना को जगाया है। हो सकता है कि इन्हीं कारणों से कुछ लोगों को तकलीफ हुई हो और उन्हीं लोगों ने इस प्रकार का षड्यंत्र रचा हो। मैं पहले मीडिया पर बहुत विश्वास करता था लेकिन मीडिया बापू के बारे में जो चला रहा है, उसे सुन-देखकर मुझे भी आजकल मीडिया की विश्वसनीयता पर संदेह हो रहा है, मीडिया पर अब प्रश्नचिह्न लगने लगे हैं।

बापूजी के साहित्य को मैंने पढ़ा है, आज भी पढ़ता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि इनके जीवन और ज्ञान से दलदल में फँसा व्यक्ति भी कीचड़ में कमल की तरह खिलकर अपने-आपको व समाज को गौरवान्वित कर सकता है। ऐसे में बापूजी के बारे में जो यह अनर्गल प्रलाप हो रहा है वह हमारे गले नहीं उतरता है। और जो इतना बवाल मचाया जा रहा है, हो सकता है कि कुछ ताकतें इनके पीछे लगी हों जिनके बलबूते पर कुछ लोग अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए भी इस षड्यंत्र में साथ दे रहे हैं लेकिन

जाको राखे साईंयाँ, मार सके ना कोय । बाल न बाँका करि सकै, चाहे जग बैरी होय ॥

हमारे बापूजी जो वयोवृद्ध हैं और जिनका आशीर्वाद संतों और भक्तों को मिलता आया है, उन पर घृणित आरोप लगाये जा रहे हैं, ये सारे-के-सारे आरोप निराधार हैं। बापू बहुत जल्दी ही निर्दोष बरी होंगे और आज इस दुनिया में बापू का जितना नाम है उससे भी कई गुना ज्यादा होगा। बापू के समर्थकों का आज जितना हुजूम हम लोग देखते हैं, उससे भी कई गुना ज्यादा हुजूम हमें तब देखने को मिलेगा।

करोड़ों लोगों की बात अनदेखी नहीं करनी चाहिए

– भरतसिंह, विधायक, इंडियन नेशनल लोकदल, दिल्ली इकाई के अध्यक्ष

लाखों की बात नहीं, करोड़ों लोग बापूजी के भक्त हैं इसमें कोई दो राय नहीं है। मैं मीडिया से एक बात कहना चाहूँगा कि 'यदि आप बापूजी के विषय में दिखा रहे हो तो उसका जो सच है या जो बात उनके करोड़ों लोग कह रहे हैं वह भी तुम्हें दिखानी चाहिए। उन्हें अनदेखा नहीं करना चाहिए।'

यह सब साजिश के तहत ही हो रहा है और बिल्कुल गलत है। अरे ! शर्म की बात है। इस तरीके के घिनौने आरोप लगाकर एक बाप-बेटी के रिश्ते में और पति-पत्नी के बारे में आप क्या मान्यताएँ पैदा कर रहे हैं ! यह जीवन में कभी नहीं हो सकता।

मुस्लिम समाज भी बापूजी का बहुत आदर करता है

– हसन साहब

बापूजी जैसे नेक आदमी हमने नहीं देखे। उनसे बढ़िया आदमी कोई भी नहीं देखा। वे सबकी भलाई करते हैं। उनको जबरदस्ती फँसाया गया है। उनको घेर के कई साल से उनके पीछे पड़े हुए हैं कि उनको कैसे फँसाया जाय ? इसी हिसाब से उनको फँसाया गया है।

हिन्दू समाज, मुस्लिम समाज - हर समाज बापूजी का बहुत आदर करता है, बहुत इज्जत करता है। न्यायालय उनको जमानत दे। एक अच्छे आदमी को कैसे फँसाया गया है उसकी छानबीन करे और जिसने फँसाया है उसको पकड़े। हकीकत क्या है, उसको जनता के आगे लाये।

शक्ति, भक्ति व मुक्ति प्रदायक दिव्य ग्रंथ : श्रीमद् भगवद्गीता

(श्रीमद् भगवद्गीता जयंती : १३ दिसम्बर)

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को कुरुक्षेत्र के मैदान में चारों ओर बजती रणभेरियों के बीच, योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को निमित्त बनाकर मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए उपनिषदों का अमृत श्रीमद् भगवद्गीता के रूप में छलकाया, इसलिए इस दिन को 'गीता जयंती' के रूप में मनाते हैं। विश्व में केवल श्रीमद् भगवद्गीता ही एक ऐसा ग्रंथ है जिसकी जयंती व्यापक रूप से मनायी जाती है। गीता का ज्ञान मोक्ष प्रदान करनेवाला है, अतः इस दिन को मोक्षदा एकादशी के रूप में भी मनाया जाता है। इस छोटे-से ग्रंथ में जीवन की गहराइयों को छूता ऐसा सनातन सत्य का उद्घोष है जिसके नित्य अध्ययन, चिंतन-मनन से मनुष्य की हताशा, निराशा व चिंता मिटकर वह निश्चिंतता व परमानंद के साम्राज्य में सहज में ही प्रवेश कर जाता है। गीता का अद्भुत ज्ञान मानव में से महेश्वर को प्रकट करने की क्षमता रखता है।

'गीता' ने अनेक प्रकार के कर्म व प्रवृत्तियाँ करते हुए भी निर्लेप व अलमस्त रहने का रहस्य मुक्तकंठ से उद्घोषित किया है। 'कर्मयोग का आश्रय लेकर फल की इच्छा का त्याग करके दत्तचित्त से (खूब मन लगाकर) धर्मार्थ कर्म करो। भक्तियोग की दृष्टि से स्वकर्म द्वारा भगवान का अर्चन करो तथा फल भगवान के अधीन समझकर परमात्मा की इच्छा में अपनी इच्छा मिलाओ तथा ज्ञान दृष्टि से गुण ही गुणों में बरत रहे हैं ऐसा देखते हुए अनासक्त रहो।' - ऐसा कर्मयोग, भक्तियोग व ज्ञानयोग का अद्भुत समन्वय करनेवाला यह दिव्य ग्रंथ है।

श्री उड़िया बाबा कहते थे कि ''भूमंडल के इतिहास में 'गीता' के समान जीव को आदर्श और वास्तविकता प्रदान करनेवाला कोई और ग्रंथ नहीं है। यह अनंत शक्ति का भंडार तथा उसका अनादि, अनंत स्रोत रहा है।''

'स्कंद पुराण' के अनुसार 'गीता सदा सब पापों को हरनेवाली और मोक्ष देनेवाली है। गीता के समान कोई शास्त्र न तो हुआ है और न होगा।'

गीता वास्तव में किसी देश या काल विशेष के लिए नहीं है। यह सम्पूर्ण विश्व के प्राणियों के लिए सार्वभौम सनातन धर्म का विश्वकोश है। इसीलिए हमारे मंत्रद्रष्टा और गीता-द्रष्टाओं ने आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक विकास तथा दिन-प्रतिदिन सुखद उन्नत जीवनयात्रा के लिए गीता के सिद्धांतों को अपनाने की सुंदर प्रेरणा दी है। वर्तमान युग की समस्याओं से निपटने में श्री गीताजी के सिद्धांत बहुत ही कारगर हैं। आज इस तथ्य को केवल भारत ही नहीं विदेशों में भी स्वीकारा जा रहा है और विद्यार्थियों को 'गीता' की शिक्षा मिले ऐसे प्रयास भी किये जा रहे हैं।

महामना मदनमोहन मालवीयजी गीता के प्रचार-प्रसार पर बहुत जोर देते थे। वे कहते थे कि ''संसार में

'भगवद्गीता' के समान भक्ति की शिक्षा देनेवाला कोई दूसरा ग्रंथ नहीं है । इस ग्रंथ का जितना प्रचार-प्रसार होगा, उतना ही मनुष्य-जाति का उपकार होगा।''

स्वामी विवेकानंदजी कहते थे : ''गीता का ज्ञान प्रत्येक मानव तक पहुँचाना चाहिए ।'' और यह महान राष्ट्र-उन्नतिकारक कार्य वर्तमान युग में ब्रह्मनिष्ठ संत पूज्य बापूजी द्वारा वैश्विक स्तर पर किया जा रहा है । पिछले ५० वर्षों से बापूजी सत्संग-अमृत द्वारा देश-विदेश में जन-जन तक गीता-ज्ञान पहुँचाकर विश्व-कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। साथ ही पूज्यश्री की प्रेरणा से साधक 'गीता जयंती' का पावन पर्व बड़े पैमाने पर मनाते हैं। आश्रमों तथा कई स्थानों पर सामूहिक रूप से भी 'श्रीमद् भगवद्गीता' का पाठ एवं पूजन का आयोजन किया जाता है । देशभर के 'बाल संस्कार केन्द्रों' व 'युवा सेवा संघों' तथा 'महिला उत्थान मंडलों' द्वारा श्री गीताजी की शोभायात्राएँ निकाली जाती हैं तथा पुस्तकों का वितरण किया जाता है।

गीता के रहस्योद्घाटक, अनुभवनिष्ठ पूज्य बापूजी कहते हैं : ''गीता केवल किसी एक ही धर्म, जाति अथवा सम्प्रदाय से संबंधित ग्रंथ नहीं है वरन् विश्व के समस्त मानवों के कल्याण की अलौकिक सामग्री से परिपूर्ण ग्रंथ है। श्रीमद् भगवद्गीता के ज्ञानामृत के पान से मनुष्य के जीवन में साहस, समता, सरलता, स्नेह, शांति और धर्म आदि दैवी गुण सहज ही विकसित हो उठते हैं। गीता मानव में से महेश्वर का निर्माण करने की शक्ति तथा जीते-जी मुक्ति का अनुभव कराने का सामर्थ्य रखती है। भोग एवं मोक्ष दोनों प्रदान करनेवाला यह ग्रंथ पूरे विश्व में अद्वितीय है।''

अतः जिनके जीवन में गीता का ज्ञान है, गीता के मर्म को समझनेवाले महापुरुषों का संग है वे अपना जीवन धन्य कर लेते हैं।

तो आइये, गीता के ज्ञान-प्रसाद से विश्वमानव लाभान्वित हो इसीलिए गीता जयंती पर हम सभी संकल्प करें कि 'गीता का ज्ञान जो हमें संत-महापुरुषों के माध्यम से मिल रहा है, उसे हम अपने जीवन में उतारेंगे तथा अन्य लोगों तक भी पहुँचायेंगे।'

देशवासियों की भावनाओं से खेलना अपराध है

– प्रसिद्ध लेखक प्राणशंकर जोशी

रुपये का अवमूल्यन, महँगाई की मार, पेट्रोल-डीजल के निरंतर बढ़ते दाम, दंगा-फसादों, बेरोजगारी आदि कई गम्भीर मुद्दों से आम आदमी का ध्यान हटाने के लिए समय-समय पर सम्मानित संतों का चरित्रहनन करना, निराधार आरोपों में उन्हें फँसाकर राजनैतिक दबाव द्वारा प्रताड़ित करते रहना आम बात हो गयी है। और इसीका फायदा उठाकर धर्मांतरणवाले, विदेशी कम्पनियाँ हमारे हिन्दू धर्म को नष्ट करने का दुस्साहस करती रही हैं । शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी, स्वामी नित्यानंदजी, कृपालुजी महाराज जैसे कई संतों को सताया गया है एवं इस क्रम में अब संत श्री आशारामजी बापू को प्रताड़ित करके बिना कोई अपराध सिद्ध हुए लम्बे समय से जेल में रखे हुए हैं। **संतों को प्रताड़ित करके आम जनता का देश की विषम परिस्थितियों से ध्यान हटाना – यह घिनौना षड्यंत्र नहीं तो और क्या है ?**

इन सबसे ऊपर विदेशी फंड से चलनेवाले चैनल गलत एवं आधारहीन तथ्य पेश कर मनगढ़ंत, झूठी, काल्पनिक कहानियों द्वारा संतों एवं सम्मानित नागरिकों का चरित्रहनन कर अपने को संदेह के दायरे में ले आये हैं। अदालत में आरोप सिद्ध होने के पहले मीडिया द्वारा उन्हें दोषी ठहराना, आपराधिक बोध दर्शाना... इन सबसे मीडिया द्वारा अपनी स्वतंत्रता का अत्यधिक दुरुपयोग करना सिद्ध नहीं होता क्या ? मीडिया के कुछ चैनल अपनी टीआरपी बढ़ाने अथवा राजनैतिक दबाव या धन के लालच में हिन्दुस्तान की संस्कृति व धर्म के रक्षक संत-समुदाय के विरुद्ध घिनौनी खबरें दिखाते रहे हैं। ये बिकाऊ चैनल संतों द्वारा अविरत चल रहे सेवाकार्यों को कभी नहीं दिखाते। मीडिया को किसीकी प्रतिष्ठा को धूमिल करने का अधिकार कतई नहीं है।

'ए2जेड', 'सुदर्शन चैनल' जैसे कुछ निष्पक्ष चैनल हैं, जिनके द्वारा हमें सच्चाई दिखलायी जा रही है।

मीडिया को हमें भ्रमित करने का, करोड़ों लोगों की श्रद्धा को तोड़ने का कोई अधिकार नहीं है। देशवासियों की भावनाओं से खेलना अपराध है। निश्चित तौर पर मीडिया पर नियंत्रण नितांत जरूरी है।

सरलता-सज्जनता की मूर्ति, लाखों-करोड़ों की माँ लक्ष्मीदेवीजी के उद्गार

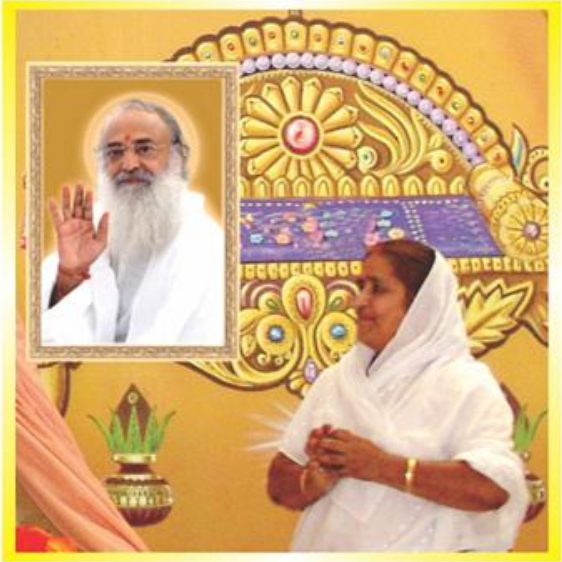

पूज्य बापूजी के ऊपर जो आरोप लगे हैं, वे बेबुनियाद हैं। मेरे बापूजी कितने संयमी संतपुरुष हैं ! उनकी छत्रछाया में लाखों-करोड़ों लोगों का जीवन संयमी हुआ है यह सभी लोग जानते हैं। पूज्य बापूजी के लिए यह कुप्रचार टिकेगा नहीं। बापूजीरूपी सूर्य को कुप्रचार के झूठे आरोप रूपी बादल ज्यादा समय ढँक नहीं पायेंगे। मेरा सौभाग्य है कि बापूजी जैसे पवित्र पुरुष मुझे पतिरूप में मिले हैं और अब मैं उनको अपने गुरुदेव के रूप में पूजती हूँ।

बापूजी शादी के ८ दिन पहले भरूच (गुज.) के अशोक आश्रम में चले गये थे। उनके भाई और दूसरे लोगों ने हाथाजोड़ी करके उनको वचन दिया कि ''तुम एक बार शादी कर लो फिर संयम, ब्रह्मचर्य और साधुताई का जैसा भी जीवन बिताओगे, हम रोकेंगे नहीं। अभी तुम शादी नहीं करोगे तो हमारे बेटे-बेटियों के विवाह आदि में अड़चन होगी।'' शादी के बाद आपके और मेरे गुरुजी (बापूजी) संयम से रहने लगे। उनकी माता और भाभी ने मेरे ऊपर दबाव बनाया कि ''ये साधु बन जायेंगे। तुम इनके कमरे में जाओ, इनको संसारी बनाओ।'' और मेरे माता-पिता, भाई-भाभी ने भी खूब कह रखा था कि ''वे (बापूजी) ब्रह्मचारी रहना चाहते हैं, साधु बनना चाहते हैं। तुम उनको पिक्चर में ले जाना और संसारी बनाना।'' मैंने उनको पिक्चर की बात कही तो वे रविवार को पिक्चर के लिए मुझे ले गये लेकिन सत्संग में पहुँच गये। हरगोविंद पंजाबी उनके सत्संगी मित्र थे। बापूजी ने उनके द्वारा उनकी पत्नी को कहलवा दिया कि ''इसे सत्संग का रंग लगाओ।'' हरगोविंदजी की पत्नी के संग से मेरे मन में पिक्चर आदि के तुच्छ संस्कार जो लोगों ने भरे थे, वे कट गये। यह पहली कृपा उनकी (बापूजी की) मुझ पर हुई। मेरे भक्ति और भगवत्प्राप्ति के संस्कार जग गये। 'भगवत्प्राप्ति ही सार है, बाकी सब बेकार है' - ये सब संस्कार पति-परमात्मा की पहली कृपा से प्रकट हो गये। ''घर में रहने से फिसल सकते हैं इसलिए मैं नीलकंठ महादेव आश्रम शाला में रहूँगा व दिन में भाई को दुकान में मदद करूँगा।'' ऐसा कह के वे चले गये। वहीं जब परीक्षा के दिन आये तो 'हितोपदेश' पुस्तक का एक श्लोक उनके पढ़ने में आया :

तेनाधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितम्।
येनाशाः पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलम्बितम्॥

'जिसने आशा को पीछे कर आशारहितता का सहारा लिया है, उसीने पढ़ा, उसीने सुना और उसीने सब कुछ कर लिया।' **(१.१४६)**

उसने सब अध्ययन कर लिये, सारे अनुष्ठान कर लिये जिसने इच्छा-वासनाओं को छोड़ा और इच्छारहित पद का अवलम्बन लिया है। अब इन महापुरुष को परीक्षा से क्या लेना ? घर आये और पूजा के कमरे में मुझे बुलाकर कहा कि ''ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा। मैं ईश्वरप्राप्ति के लिए जा रहा हूँ।'' कहकर चले गये। सात वर्ष तक परम पूज्य लीलाशाहजी की छत्रछाया में रहे।

मैं इनकी (पूज्य बापूजी की) साधना, संयम, नियम-निष्ठा से प्रभावित थी। इनके गुरुजी को मेरी सज्जनता बतायी गयी और वे किसी कारण से अहमदाबाद पधारे। सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी

महाराज ने मेरे सिर पर हाथ रखा, तब से मेरे आध्यात्मिक जगत में चार चाँद लग गये। आज लाखों-करोड़ों महिलाओं में मैं जितनी सुखी हूँ और आध्यात्मिक प्रसाद से पावन हुई हूँ यह मैं जानती हूँ, भगवान जानते हैं और आपके और हमारे गुरुजी (पूज्य बापूजी) जानते हैं। मैं बहुत-बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसे महान आत्मा पतिरूप में मिले और गुरुरूप में बहुत मदद करते हैं।

संतों को समझने के लिए सद्बुद्धि और शास्त्रज्ञान चाहिए। कुप्रचारवालों को क्या पता कि सत्संगियों को क्या मिलता है ! उज्ज्वल भविष्य के साथ हमारे कुल-खानदान और जाति की ऐसी कोई महिला नहीं होगी जितना मेरा जीवन धन्य हुआ और मेरे करोड़ों-करोड़ों बच्चों का जीवन भी बापूजी के सत्संग-सान्निध्य से उज्ज्वल हुआ है। भगवान शिवजी ने कितने सुंदर वचन कहे हैं :

धन्या माता पिता धन्यो...

मेरी बेटी भारती पर जो आरोप लगे हैं वे सब झूठे हैं। मुझे उसके आचरण पर और संयम पर पूरा विश्वास है। वह संयमी है और उसके संग से अनेक लड़कियाँ संयमी हो जाती हैं। क्या आप सबको मानने में आयेगा कि ऐसा (आरोपित) काम पत्नी और बेटी कर सकती है ? कभी नहीं, कभी नहीं !

(भारतीदेवीजी के सम्पर्क में भी कई बच्चियों का जीवन संयमी, सदाचारी और उज्ज्वल हुआ है और लक्ष्मी मैया के सम्पर्क में भी। और हमारी प्यारी मैया के परिवारवाले भी गुरुभाई एवं गुरुबहनें ही हैं।

- सम्पादक)

पकड़ा गया ब्रजबिहारी उर्फ विनोद कुमार उर्फ ठग भोलानंद

संत श्री आशारामजी आश्रम, जम्मू में बच्चों के दफन होने का झूठा आरोप लगानेवाले ब्रजबिहारी गुप्ता उर्फ विनोद उर्फ ठग भोलानंद को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

गौरतलब है कि ठग भोला के षड्यंत्र का स्टिंग ऑपरेशन में भांडाफोड़ हुआ था और उसके खिलाफ साजिश रचने, अपराध के लिए दूसरों को उकसाने और किसी धर्मस्थान को नुकसान पहुँचाने के जुर्म में एफआईआर दर्ज की गयी थी।

ठग भोला ने पुलिस के सामने अपना जुर्म कबूल कर लिया है कि उसने श्मशान घाट से बच्चों का कंकाल लाकर आश्रम की जमीन में दबाने हेतु साजिश रची थी।

जम्मू के विक्की कुमार ने ठग भोला द्वारा उससे हुई बातचीत की सीडी एवं फोन की कॉल डिटेल पुलिस को देकर इस कंकाल दबाने की साजिश का खुलासा किया था।

पुण्यदायी तिथियाँ

८ दिसम्बर : रविवारी सप्तमी (सुबह ११-१३ से ९ दिसम्बर सूर्योदय तक)
१३ दिसम्बर : मोक्षदा-वैकुंठ-मौनी एकादशी (सब पापों का हरण करनेवाली तथा मोक्षप्रदायक), श्रीमद् भगवद्गीता जयंती
१६ दिसम्बर : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३४ तक)
२० दिसम्बर : गुरुपुष्यामृत योग (प्रातः ७-०२ से २० दिसम्बर सूर्योदय तक)
२५ दिसम्बर : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से २६ दिसम्बर सूर्योदय तक)
२९ दिसम्बर : सफला एकादशी (हजार वर्षों की तपस्या का फल देनेवाली)

गहरी साजिश के तहत सेवादारों को फँसाया गया

भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के षड्यंत्र के तहत पूज्य बापूजी पर झूठे, बेबुनियाद आरोप लगाकर उन्हें जेल भेजा गया। साथ ही बापूजी के सेवादारों को भी इस घिनौनी साजिश के तहत झूठे आरोपों में फँसाया गया है। बापूजी के सत्संग से तो कितने ही हताश-निराश लोगों को जीवन जीने की नयी दिशा मिली है, उनका जीवन उन्नत हुआ है। बापूजी के बारे में ऐसी बातों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस कलियुग में जहाँ अपनी खुद की संतान भी बात मानने को तैयार नहीं होती, ऐसे समय में एक-दो नहीं करोड़ों लोग पूज्य बापूजी को आदर से सुनते-मानते हैं; इसके पीछे है पूज्य बापूजी का संयम, सदाचार, जप, तप, तितिक्षा और विश्वमानव के परोपकार की मंगल भावना। पूज्य बापूजी के बारे में चल रही अनर्गल बातों में यदि जरा-सी भी सच्चाई होती तो यह समझनेवाली बात है कि करोड़ों लोग पूज्य बापूजी से जुड़ते ही क्यों ! और इन करोड़ों लोगों में कितने ही देश-विदेश के उद्योगपति, राजनेता, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि ऊँचे-ऊँचे पदों में हैं। साथ ही इस केस में जिनको आरोपी बनाया गया है, वे भी सम्पन्न घरों के शिक्षित लोग हैं। वे क्यों सब कुछ छोड़कर आश्रम में आते !

छिंदवाड़ा गुरुकुल में डायरेक्टर पद पर कार्यरत **शरदचन्द्र भाई** हैदराबाद के निवासी थे। उन्होंने हैदराबाद से 'बायो मेडिकल इंजीनियरिंग' और यूएसए से 'एमएस' की डिग्री प्राप्त की हुई है। शरदचन्द्र भाई ब्रह्मचारी हैं। उन पर आरोप लगाया गया है कि 'वे बापूजी के पास लड़कियों को भेजते थे।' यह बिल्कुल वाहियात और झूठा आरोप है। यह तो सोचनेवाली बात है कि यदि आश्रम में ऐसी घटनाएँ होतीं तो इतना पढ़ा-लिखा, धन-धान्य से सम्पन्न व्यक्ति बापूजी के पास ही क्यों आता ! दूसरी बात यदि उसे ऐसे काम करने होते तो वह आश्रम क्यों आता ! आश्रम तो भगवद्भक्ति व साधना के लिए है, समाज सेवा के लिए है।

शिल्पी गुप्ता छिंदवाड़ा गुरुकुल में छात्रावास अध्यक्षिका और संचालिका के रूप में सेवारत थीं। शिल्पी बहन के ऊपर आरोप लगाया है कि वे लड़कियों को बहला-फुसलाकर बापूजी के पास भेजती थीं। यह आरोप सरासर झूठा और बेबुनियाद है क्योंकि शिल्पी बहन ग्रेजुएट हैं तथा एक सम्पन्न परिवार से हैं। उन्हें घर में पैसों की कोई कमी नहीं है कि वे पैसे के लालच में ऐसा काम करें। शिल्पी बहन के पिताजी रायपुर में 'नगर तथा ग्राम निवेश' में 'संयुक्त संचालक' (Joint Director) पद पर हैं। यदि ऐसा कुछ होता रहता तो वे बापूजी से जुड़ती ही क्यों ? शिल्पी बहन ने बताया था कि ''ईश्वर की कृपा से मेरे घर में कोई कमी नहीं है। बापूजी के द्वारा मुझे कभी कोई प्रलोभन नहीं दिया गया है और न फ्लैट दिया गया है और न ही ऐसा कोई ऑफर आया है कि मुझे कोई बड़ी संचालिक बना देंगे। मेरी बचपन से इच्छा थी कि सेवा करूँ और यहाँ पर आकर मुझे लगा कि यहाँ मेरा निःस्वार्थ सेवा का संकल्प पूरा हो रहा है। मेरा और पूज्य बापूजी का संबंध एक पिता और पुत्री का ही है। मैं बापूजी को पिता ही मानती हूँ।''

किशोर देवड़ा बापूजी का अंगद सेवक है, ब्रह्मचारी है। उन्होंने अपने फार्म में बापूजी के लिए कुटिया बनवायी थी। बापूजी यदि ऐसा काम करते तो यह व्यक्ति कुटिया क्यों बनवाता ? बिल्कुल मनगढ़ंत कहानी बनाकर साजिशकर्ताओं द्वारा बापूजी पर घृणित आरोप लगवाये जा रहे हैं।

अब देश की जागरूक जनता इस षड्यंत्र को समझे और विचार करे कि बापूजी और उनके सेवादारों को जिस तरह सताया जा रहा है, क्या उनका यही गुनाह है कि उन्होंने देश, संस्कृति व समाज को नोचने व तोड़ने वाली ताकतों से देशवासियों को बचाने का प्रयत्न किया ?

मालवीयजी का स्वदेश-प्रेम व धर्मनिष्ठा

(पं. मदनमोहन मालवीय जयंती : २५ दिसम्बर)

मालवीयजी सनातन धर्म के प्रबल पोषक थे। वे कहते थे : 'पृथ्वीमंडल पर जो वस्तु मुझको सबसे अधिक प्रिय है, वह है धर्म और वह धर्म 'सनातन धर्म' है।' यही कारण था कि उनके जीवन में निर्भयता, करुणा, दया, परोपकार आदि सनातन धर्म के सिद्धांत पग-पग पर दिखायी देते थे। स्वदेशी कारीगरों को प्रोत्साहन देने के लिए 'देशी तिजारत कम्पनी' की स्थापना, स्वदेशी वस्तुओं तथा स्वदेश के प्रति मालवीयजी के अगाध प्रेम का परिणाम था। वे प्रायः संस्कृत का एक श्लोक कहा करते थे, जिसका अर्थ है : ''...उत्तम लोग विघ्नों से (बार-बार) प्रताड़ित होने पर भी प्रारम्भ किये हुए कार्य को नहीं छोड़ते।'' उनके जीवन का मूलमंत्र था : **'हारिये न हिम्मत, विसारिये न राम।'** इसी सिद्धांत के बल पर वे काशी विश्वविद्यालय जैसा मुश्किल कार्य करने में सफल हो पाये।

एक बार बीमारी के कारण मालवीयजी की हालत बड़ी नाजुक हो गयी, डॉक्टरों ने बात करने पर भी रोक लगा दी। एक दिन उनके पास एक वृद्ध पंजाबी आये। उनकी हालत देखकर वे बड़ी गम्भीर मुद्रा बनाकर बैठ गये। चलते समय वे प्रेमातुर हो कह उठे : ''मालवीयजी ! आपकी बीमारी उस मेहनत और परेशानी का नतीजा है, जो आपने इस भारी कार्य के लिए सिर पर उठायी है। आपकी हालत देखकर बहुत दुःख होता है। ईश्वर आपको जल्दी ठीक करे।'' ये बातें उन्होंने बड़े धीरे-धीरे, रुक-रुककर कहीं। मालवीयजी समझ गये कि वे क्या कहना चाहते हैं। उस शारीरिक कष्ट में भी उन्होंने कहा : ''भाई ! आपकी बड़ी कृपा है कि आप मेरे लिए इतने ऊँचे विचार रखते हैं परंतु आप यह बुजदिली छोड़ दें। यह आप स्वयं जानते हैं कि मुझे अभी बहुत काम है और मरने की भी फुरसत नहीं है।''

ऐसे थे महामना मालवीयजी ! मालवीयजी एक महान नेता, विद्वान, समाज-सुधारक और प्रेम की मूर्ति थे। उनकी जयंती पर हम भी अपने जीवन में सनातन धर्म के सिद्धांतों को अपनाने तथा देश व संस्कृति की सेवा करने का संकल्प करें।

माँ के संस्कार

बालक विन्या (विनोबाजी भावे का बचपन का नाम) एक रात दीवार पर एक काला आदमी (परछाईं) देखकर अत्यंत डर गया। ऐसा लम्बा आदमी उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह डरकर माँ के पास भागा और सारी बात बतायी।

माँ ने हँसते हुए बड़ी सहजता से कहा : ''विन्या ! इसमें घबराने की क्या जरूरत है ! वह तो तेरा गुलाम है। तू जैसा चाहेगा वह वैसा ही करेगा।''

माँ के विचारों से बालक विन्या में कुछ आत्मबल आया और उसने सोचा कि 'कुछ करके देखूँ तो पता चले क्या होता है ?' वह बैठ गया। तो वह काला आदमी भी बैठ गया ! विन्या उठा तो वह भी उठ खड़ा हुआ। विन्या जो भी करे, काला आदमी भी वही करे। बालक विन्या खुश हो गया कि 'अरे, सच में यह तो मेरा गुलाम है, इससे क्या डरना !'

विनोबाजी के भक्ति व ज्ञानमय जीवन में हमेशा से उनकी भक्तिमती माँ के संस्कारों का योगदान रहा था। बच्चों के विकास में संस्कार महती भूमिका निभाते हैं। बाल्यावस्था में जैसे संस्कार दिये जाते हैं, आगे चलकर वह बालक वैसा ही बनता है। इसीलिए बचपन से ही निर्भयता, साहस, भगवद्भक्ति, आत्मबल के संस्कार दिये जायें तो ये संस्कार बच्चों को अवश्य महानता की ऊँचाइयों तक पहुँचा देंगे। वीर शिवाजी, संत विनोबाजी भावे, भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज, पूज्य बापूजी आदि महापुरुषों का जीवन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मीडिया का अतिरेक

– डीडी न्यूज (दूरदर्शन)

२७ अक्टूबर को डीडी न्यूज पर 'मीडिया का अतिरेक' विषय पर चर्चासत्र हुआ, उसका सारांश :

डीडी न्यूज : खबरों पर अंतहीन और अर्थहीन बहस और न्यूज कवरेज का ताजा उदाहरण है आशारामजी बापू प्रकरण । बापू पर यौन उत्पीड़न के आरोप खबर जरूर है लेकिन उस पर जारी बहस में समाज और महिलाओं के हित में कितना विचार-विमर्श है, यह बात विचारणीय हो जाती है। समाचार पर विचार या समीक्षा का तर्कसंगत होना भी जरूरी है। क्यों खबर को ऐसे तौर पर पेश किया जा रहा है जो वैसी है भी नहीं ?

श्री प्रमोद जोशी, वरिष्ठ पत्रकार : अखबारों में भी खबरें विकृत हुई हैं । आशारामजी की खबर में अतिरेक हुआ है इसमें कोई दो राय नहीं है । व्यापारीकरण पर कुछ अंकुश की जरूरत है।

श्री विनीत कुमार, मीडिया विश्लेषक : आज आशारामजी से मीडिया को दिक्कत है । मीडिया को सारी दिक्कत सार्वजनिक प्रतिष्ठानों से इसलिए है क्योंकि कई प्रतिष्ठानों ने अलग से विज्ञापन के पैकेज न्यूज चैनल्स को नहीं दिये । मीडिया चैनल्स पत्रकारिता के नाम पर इन पर उँगलियाँ उठाते हैं तो वे उद्योग के लिए एक जमीन तैयार कर रहे हैं (पेड न्यूज को बढ़ावा दे रहे हैं)।

दर्शक १ : मीडिया पर भी नियंत्रण होना चाहिए। उसकी देश के प्रति जिम्मेदारी बनती है।

दर्शक २ : आजकल जो आशारामजी बापू को लेकर खबरें चला रहे हैं, उसके चक्कर में बाकी जो खबरें दर्शकों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं वे छूट जाती हैं।

श्री कुर्बान अली, पूर्व बीबीसी संवाददाता : मीडिया बौरा गया है। टीआरपी के लिए वह तमाम तरह की चीजें दिखा और कर रहा है। पैसा ही कमाना है तो और बहुत सारे धंधे हैं।

दर्शक ३ : खबर दिखायें, मुद्दे को दिखायें। मुझे बहुत दुःख होता है कि मुझे समाचार देखने के लिए नीचे पट्टियाँ देखनी पड़ती हैं। खबर नहीं दिखती, खोजनी पड़ती है कि कहाँ है।

दर्शक ४ : न्यूज एक तरीके के 'रियलिटी शोज' बन गये हैं।

श्री विनीत कुमार : खबरों में सिर्फ नैतिकता का सवाल नहीं है, कानून का भी सवाल है । गुमराह करनेवाले चैनलों पर केस किये जाने चाहिए।

दर्शक ५ : हम मीडिया का जो परिदृश्य देख रहे हैं, उसे देखकर कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा कि यह हमारे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है।

दर्शक ६ : चैनल्स जो खुद चाहते हैं वही दिखाते हैं और सिर्फ उनके अपने तरीके से ही। जनता क्या कह रही है, क्या सुन रही है, जनता का कितना नुकसान हो रहा है इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। महत्त्वपूर्ण खबरें तो कहीं हैं ही नहीं !

दर्शक ७ : ये न्यूज चैनल्स देखने का मन ही नहीं करता। उनका महत्त्व ही खत्म हो गया है।

दर्शक ८ : आज का मीडिया केवल अपनी खबर को बेचना जानता है।

श्री अविनाश पांडे, सीओओ, एबीपी न्यूज : लोगों के विचार ठीक हैं कि इतना ज्यादा किसी भी न्यूज को घसीटा नहीं जाना चाहिए, पूरे दिन नहीं दिखाना चाहिए। यह मीडिया लाइव न्यूज का १३ साल पुराना बिजनेस (व्यापार) है। किसी भी न्यूज चैनल को चलने के लिए पैसा चाहिए होता है । आप कभी भी विज्ञापन के माध्यम से वह पैसा वसूल नहीं कर सकते।

(तो पैसा वसूलने के अन्य कौन-कौन से तरीके होंगे तथा एक ही विषय पर अंतहीन और अर्थहीन बहसों व न्यूज कवरेज का रहस्य क्या है यह सबको पता चल ही गया होगा।

– वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर)

मीडिया नैतिकता के मानकों का पालन करें : राष्ट्रपति

भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने मीडिया को सनसनी फैलाने तथा तथ्यों को विकृत करके समाज को गुमराह करने से बचने की सलाह देते हुए कहा था : ''मीडिया को वास्तविक तथ्यों की जगह गपशप और अटकलों को नहीं लाना चाहिए । राजनीतिक और व्यावसायिक हितों को विधिसंगत और स्वतंत्र राय के तौर पर प्रकट नहीं किया जाय । मीडिया अपने पाठकों और दर्शकों के माध्यम से राष्ट्र के प्रति जवाबदेह है।''

आशारामजी बापू के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करनेवालों की मुसीबत बढ़ी

एन.बी.एस.ए. ने 'इंडिया टीवी' को लगायी कड़ी फटकार

'नेशनल ब्रॉडकास्टिंग स्टैंडर्ड्स ऑथोरिटी' (एन.बी.एस.ए.) ने 'इंडिया टीवी' न्यूज चैनल को पूज्य बापूजी के लिए अपमानजनक, व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करने के लिए चेतावनी जारी की है । बापूजी के कुछ भक्तों ने इंडिया टीवी के दुष्प्रयासों के खिलाफ एन.बी.एस.ए. में फरियाद की थी, जिस पर कार्यवाही करते हुए एन.बी.एस.ए. ने यह नोटिस जारी की है।

उल्लेखनीय है कि इंडिया टीवी पर प्रसारित कार्यक्रम 'बदनाम बापू' में पूज्य बापूजी के लिए अपमानजनक और अभद्र शब्दों का प्रयोग किया गया था। एन.बी.एस.ए. ने आगे इंडिया टीवी को चेतावनी देते हुए कहा कि भविष्य में अगर असावधानी बरती गयी तो उनके चैनल पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

आज की दौड़-धूपभरी जिंदगी जीनेवालों के पास इतना समय कहाँ है कि वे शास्त्रों में वर्णित विधि-विधान से पतितपावनी तुलसी का सेवन कर सकें। यह ध्यान में रखते हुए आश्रम के पवित्र वातावरण में उपजी सर्वरोगहारी तुलसी से होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति द्वारा छोटी-छोटी मीठी गोलियों के रूप में बनायी गयी हैं :

होमियो तुलसी गोलियाँ

इनका नियमित सेवन : ✻ स्मरणशक्ति व पाचनशक्ति वर्धक। ✻ हृदयरोग, दमा, टी.बी., हिचकी, विष-विकार, ऋतु-परिवर्तनजन्य सर्दी-जुकाम, श्वास-खाँसी, खून की कमी, दंत रोग, त्वचासंबंधी रोग, सिरदर्द, प्रजनन व मूत्रवाही संस्थान के रोगों में लाभकारी। ✻ कुष्ठरोग, मूत्र व रक्त विकार आदि में लाभदायी । हृदय, यकृत (लीवर), प्लीहा व आमाशय हेतु बलवर्धक। ✻ बच्चों का चिड़चिड़ापन, जीर्णज्वर, सुस्ती, दाह आदि में उपयोगी। ✻ संधिवात, मधुमेह (डायबिटीज), यौन-दुर्बलता, नजला, सिरदर्द, मिर्गी, कृमि रोग एवं गले के रोगों में लाभदायी। ✻ भारी व्यक्ति का वजन घटाता है एवं दुबले-पतले व्यक्ति का वजन बढ़ाता है। ✻ हर आयुवर्ग के रोगी तथा निरोगी, सभीके लिए लाभदायी। ✻ कफ व वायु की विशेष रूप से नाशक। पित्त प्रकृतिवालों को सेवन करनी हो तो २-२ गोली सुबह-शाम आधा कप पानी में घोल के लें।

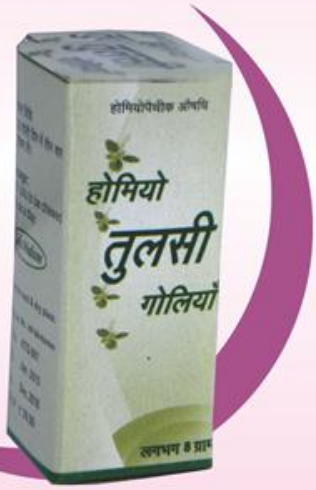

इसके अलावा ये अनेक बीमारियों में अत्यंत लाभदायी हैं, जिनकी जानकारी के लिए इन गोलियों के साथ दिये गये जानकारी पर्चे को पढ़ें।

सम्पर्क : (०१७०४) २२३३४३, ०९३१८१ ९०४६७

घरेलू सात्त्विक शिशु आहार (बेबीफूड)

आजकल बालकों को दूध के अलावा बाजारू बेबीफूड (फॅरेक्स आदि) खिलाने की रीति चल पड़ी है। बेबीफूड बनाने की प्रक्रिया में अधिकांश पोषक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं, कई बार कृत्रिम रूप से वापस मिलाये जाते हैं, जिसे बालकों की आँतें अवशोषित नहीं कर पातीं। बेबीफूड का मुख्य घटक अतिशय महीन पिसा हुआ गेहूँ का आटा है, जो चिकना होने के कारण आँतों में चिपक जाता है। आटा पीसने के बाद एक हफ्ते में ही गुणहीन हो जाता है जबकि बेबीफूड तैयार होने के बाद हाथ में आने तक तो कई हफ्ते गुजर जाते हैं। ऐसे हानिकारक बेबीफूड की अपेक्षा शिशुओं के लिए ताजा, पौष्टिक व सात्त्विक खुराक परम्परागत रीति से हम घर में ही बना सकते हैं।

विधि : १ कटोरी चावल (पुराने हों तो अच्छा), २-२ चम्मच चना, तुअर व मसूर की दाल, ६-६ चम्मच मूँग की दाल व गेहूँ - इन सबको साफ करके धोकर छाँव में अच्छी तरह से सुखा लें। धीमी आँच पर अच्छे-से सेंक लें। मिक्सर में महीन पीस के छान लें। ३-४ माह के बालक के लिए शुरुआत में आधा कप पानी में आधा छोटा चम्मच मिलाकर पका लें। थोड़ा-सा सेंधा नमक डालकर पाचनशक्ति अनुसार दिन में एक या दो बार दे सकते हैं। धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाते जायें। बालक बड़ा होने पर इसमें उबली हुई हरी सब्जियाँ, पिसा जीरा, धनिया भी मिला सकते हैं। हर ७ दिन बाद ताजा खुराक बना लें।

यह स्वादिष्ट व पचने में अतिशय हलका होता है। साथ ही शारीरिक विकास के लिए आवश्यक प्रोटीन्स, खनिज व कार्बोहाइड्रेट्स की उचित मात्रा में पूर्ति करता है।

छुहारे की पौष्टिक खीर

विधि : १ से ३ मीठे छुहारे रात को पानी में भिगो दें। सुबह गुठली निकालकर पीस लें। एक कटोरी दूध में थोड़ा पानी, पिसे छुहारे व मिश्री मिला के उबाल लें। खीर तैयार !

लाभ : यह खीर बालकों के शरीर में रक्त, मांस, बल तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाती है। टी.बी., कुक्कर खाँसी, सूखारोग आदि से बच्चों का रक्षण करती है। गर्भिणी स्त्री यदि तीसरे महीने से इसका नियमित सेवन करे तो गर्भ का पोषण उत्तम होता है। कुपोषित बालकों व गर्भिणी स्त्रियों के लिए यह खीर अमृततुल्य है।

दिमागी ताकत व तरावट लानेवाला योग

लाभ : यह योग शरीर के लिए तो पौष्टिक है ही, साथ ही दिमागी ताकत और तरावट के लिए भी बहुत गुणकारी है। विद्यार्थियों के लिए यह नुस्खा विशेष लाभदायी है।

विधि : ५०० ग्राम बबूल की गोंद शुद्ध घी में तलें व फूल जाने पर निकाल के बारीक पीस लें। इसमें बराबर मात्रा में पिसी मिश्री मिला लें। २५० ग्राम बीज निकाला हुआ मुनक्का और १०० ग्राम बादाम की गिरी दोनों को कूट-पीसकर इसमें मिला लें।

मात्रा : सुबह नाश्ते के रूप में इसे २ चम्मच अर्थात् लगभग २०-२५ ग्राम खूब चबा-चबाकर खायें। फिर एक गिलास मीठा दूध घूँट-घूँट करके पी लें।

ध्यान दें : अच्छी तरह खुलकर भूख लगने पर ही भोजन करें।

आशारामजी बापू जैसे संतों को ही क्यों फँसाया जाता है ?

(संदर्भ : 'न्यूयॉर्क टाइम्स' में प्रकाशित एक लेख)

आशारामजी बापू एक प्रख्यात आध्यात्मिक संत हैं, जिन्होंने विश्वभर में ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी है। बढ़ती अनैतिकता के खिलाफ उन्होंने काफी अभियान चलाये हैं। उनमें से एक है 'वेलेंटाइन डे' के उन्मूलन का, जिसमें युवाओं को संयम से रहने का संदेश दिया जाता है।

इस साल बापूजी ने भारत की कई राज्य सरकारों के समक्ष १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का प्रस्ताव रखा। जिसका छत्तीसगढ़ सरकार ने हार्दिक समर्थन करते हुए अपने राज्य में १४ फरवरी के दिन 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' घोषित किया एवं राज्य के सभी विद्यालयों में इसका परिपत्रक भी भेज दिया।

बापूजी सदा अपने सत्संगों में पति-पत्नी को संयमी, ओज-तेजपूर्ण जीवन जीने का ज्ञान देते हैं व विशेषकर पवित्र दिनों में जैसे होली, दिवाली, पूनम इत्यादि पर शारीरिक संबंध से दूर रहने को कहते हैं : ''इन दिनों पति-पत्नी का सांसारिक व्यवहार करने से पति-पत्नी की जीवनीशक्ति का ह्रास होता है तथा शारीरिक या मानसिक विकलांग संतान उत्पन्न होती है।''

किसी धार्मिक गुरु पर यौन-शोषण का आरोप लगाया जाना और उन्हें बदनाम करना यह पहली बार नहीं हुआ है। भारत की हिन्दू, राष्ट्रवादी एवं शांतिप्रिय संस्थाएँ जैसे कि विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू क्रांति दल, हिन्दू जागृति मंच और हिन्दू धर्म रक्षा समिति ने बापूजी को पूर्ण समर्थन देते हुए कहा कि ''यह सब भारतीय साधु-संतों के खिलाफ सुनियोजित षड्यंत्र है।''

इन आरोपों से आशारामजी के भक्तों पर कोई असर होनेवाला नहीं है बल्कि उन्होंने तो आशारामजी के साथ हो रहे इस गलत व्यवहार के विरुद्ध विभिन्न शहरों व कस्बों में रैलियों द्वारा अपनी पीड़ा शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शित की एवं आरोप नहीं हटाये जाने पर देशव्यापी आंदोलन की चेतावनी भी दी। उनके एक अनुयायी ने न्यूज चैनल पर कहा : ''बापू हमारे भगवान हैं और हम उनके लिए मरने को भी तैयार हैं।''

आशारामजी बापू जैसे संतों को ही क्यों फँसाया जाता है ? जवाब आसान है कि आशारामजी जैसे संत लोगों को प्रेरणा देते हैं और असामाजिक तत्त्व जानते हैं कि ऐसे संतों पर आरोप लगाने से हिन्दू धर्म को गम्भीर आघात पहुँचेगा।

हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश

– श्री रमेश मोदी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

आज ७४ वर्ष के संत के साथ केवल अमानवीय नहीं, बल्कि दानवताभरा व्यवहार हो रहा है। कोई भी संत थोड़ा भी खुलकर आ जायें, सच्चाई बोलना शुरू करें तो वे बच नहीं सकते। आज किसी भी संत पर प्रहार होता है तो सभी संतों को एकजुट हो जाना चाहिए।

मीडिया का एक ही काम बचा है कि हिन्दू संतों के बारे में खूब कुप्रचार चलाओ। एक तरह से पूरा मीडिया विदेशी है। ४९-४९ प्रतिशत शेयर उनके हैं, सीधी बात है ऐसा ही करेंगे। बापूजी को हाइलाइट किया जा रहा है क्योंकि वे हिन्दुत्व की बात करते हैं। बापू हिन्दुत्व की बात करना बंद कर दें, देशहित को भूल जायें तो पूरे झगड़े खत्म हो जायेंगे। यह हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश है।

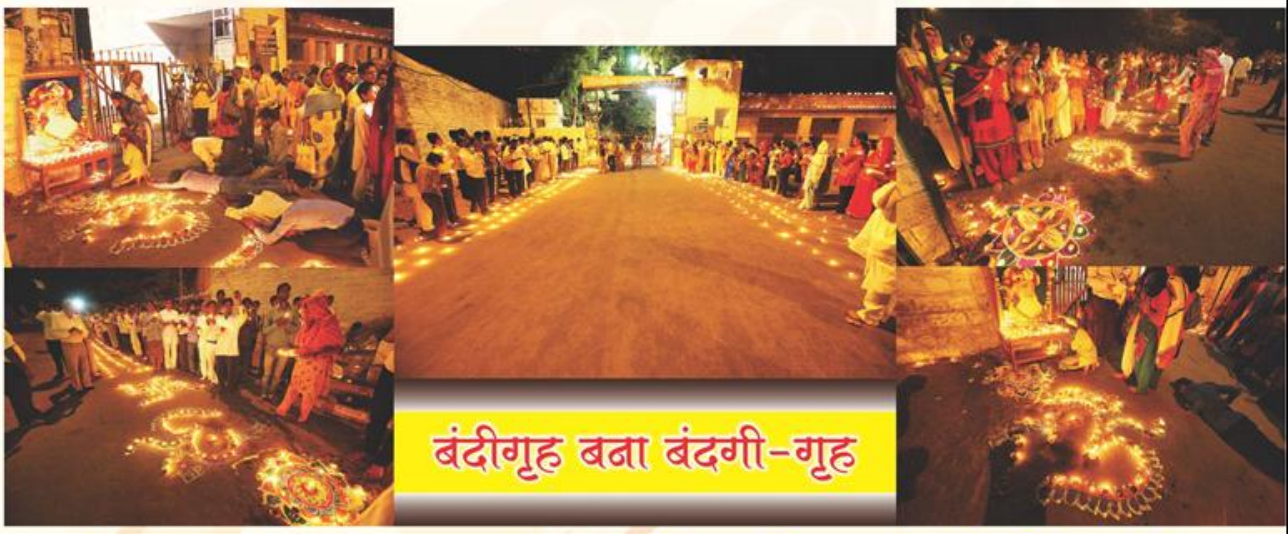

जोधपुर जेल के बाहर मनायी गयी अनोखी दिवाली !

जिस प्रकार महापुरुषों के जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ आयीं पर वे टिकी नहीं, उसी प्रकार यह परिस्थिति भी गुजर जायेगी। विकट परिस्थितियाँ तो सभीके जीवन में आती हैं। यह समय भी नहीं रहेगा।

३ नवम्बर को जोधपुर जेल के बाहर दीपावली मनाने पहुँचे हजारों श्रद्धालुओं ने यह बात साबित कर दी है कि पिछले ढाई महीनों से एक गहरे षड्यंत्र के तहत चल रहे कुप्रचार के बावजूद पूज्य बापूजी के शिष्यों और माननेवालों की आस्था में कोई फर्क नहीं पड़ा है। आमतौर पर दीपावली की रातों में वीरान रहनेवाली जेल की सड़कें इस बार बापूजी के शिष्यों ने श्रद्धा-भक्ति के साथ जलाये गये दीपों से जगमगा दीं। जेल के बाहर अपने सद्गुरु के दर्शन के लिए व्याकुल भक्तों की गीली आँखें, पूजन के लिए हाथों में दीपक और भजन-आरती की ध्वनि... बड़ा ही अद्भुत नजारा था जोधपुर कारागृह के बाहर !

श्रद्धालुओं ने जेल के मुख्य द्वार, बाउंड्री और जेल के बाहर की सड़क पर दीप जलाकर रंगोली निकाल के जेल के गेट पर बापूजी का श्रीचित्र विराजित कर आरती की व भजन गा के ऐतिहासिक दीपावली मनायी।

जोधपुर जेल में दीपावली को कुछ भक्तों को बापूजी के दर्शन का सौभाग्य मिला। बापूजी के दर्शन करते हुए भक्तों की आँखों से अश्रुधाराएँ बह चलीं और रुकने का नाम ही नहीं ले रही थीं। पूज्य बापूजी ने उन्हें दीपावली की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि ''जिस प्रकार महापुरुषों के जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ आयीं पर वे टिकी नहीं, उसी प्रकार यह परिस्थिति भी गुजर जायेगी। विकट परिस्थितियाँ तो सभीके जीवन में आती हैं। यह समय भी नहीं रहेगा। आप लोग दीपावली अच्छे से मनाना।''

कसौटियों से घबरायें नहीं

– पूज्य बापूजी

एक बीज को वृक्ष बनने में कितने विघ्न आते हैं ! कभी पानी मिला कभी नहीं, कभी आँधी आयी, कभी तूफान आया, कभी पशु-पक्षियों ने मुँह-चोंचें मारीं... यह सब सहते हुए वृक्ष खड़े हैं। तुम भी कसौटियों को सहन करते एवं उन पर खरे उतरते हुए ईश्वर के लिए खड़े हो जाओ तो तुम अपने ब्रह्मस्वभाव में जाग जाओगे। परमात्मा की प्राप्ति की दिशा में कसौटियाँ तो सचमुच कल्याण की परम सोपान हैं। जिसे तुम प्रतिकूलता कहते हो, सचमुच वह वरदान है क्योंकि अनुकूलता में विवेक सोता है, दुःख में विवेक जागता है। कसौटियों के समय घबराने से तुम दुर्बल हो जाते हो, तुम्हारा मनोबल क्षीण हो जाता है। परंतु हम सुख-दुःख का सदुपयोग कर लें तो ईश्वर हमारे पास प्रकट हो जायेंगे।

झूठी और सच्ची खबरों में अंतर

मीडिया

ब्रजबिहारी गुप्ता को मीडिया ने आचार्य भोलानंद इस फर्जी नाम से पेश करके आरोप लगवाया : ''बापू के जम्मू आश्रम में बच्चों को दफनाया गया है।''

सच्चाई

जम्मू पुलिस की जाँच-पड़ताल में आरोप निराधार साबित हुआ। जालसाज भोला द्वारा बच्चों के कंकाल आश्रम में गड़वाने का दुष्प्रयत्न किया गया। स्टिंग ऑपरेशन में भांडाफोड़ हुआ और ठग भोला के खिलाफ साजिश रचना, अपराध के लिए दूसरों को उकसाने और धर्मस्थान को नुकसान पहुँचाने के जुर्म में एफआईआर दर्ज हुई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

मीडिया

''आश्रम में कमरा नम्बर ३०२ में गर्भपात कराया जाता था। संचालिका ध्रुव बहन यह कार्य करवाने हेतु लड़कियों को ले जाती थी।''

सच्चाई

'गुजरात महिला आयोग' ने महिला आश्रम में घंटों तक पूछताछ व जाँच-पड़ताल की लेकिन उन्हें कोई शिकायत नहीं मिली। संचालिका ध्रुव बहन ने आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि ''ऐसा कुछ भी मैंने न ही किया है, न देखा है और न ही सुना है।''

मीडिया

''सेवादार शिवा की हुई थी शादी और उसने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ दिया।''

सच्चाई

शिवा भाई को बदनाम करने के लिए बनायी गयी थी बिल्कुल झूठी कहानी। जिस व्यक्ति के माता-पिता व पत्नी-बच्चों को दिखाया गया था, वह 'सुरेश चौधरी' नाम का दूसरा व्यक्ति है। जो व्यक्ति जीवित हो, उसके नाम, गाँव तथा माता-पिता को ही बदल के रख देना तथा एक अविवाहित व्यक्ति को विवाहित घोषित कर उसकी संतानें भी पैदा कर देना - यह है मीडिया की साजिश !

मीडिया

''पिछले ५ साल में संत श्री आशारामजी गुरुकुलों की ११वीं तथा १२वीं कक्षा की ९८५ छात्राएँ भागकर चली गयी हैं और २० से ज्यादा छात्राओं ने खुदकुशी कर ली है।''

सच्चाई

कोई भी छात्रा गुरुकुल छोड़कर नहीं भागी है और आज तक गुरुकुल की किसी भी छात्रा ने खुदकुशी नहीं की है। इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, छिंदवाड़ा ने भी RTI (सूचना का अधिकार) के तहत कर दी है।

मीडिया

''आशाराम बापू के खास सेवादार शिवा के पास से पुलिस को आशाराम बापू के कई अश्लील विडियो क्लिप बरामद हुए हैं।''

सच्चाई

शिवाभाई : ''मेरे साथ पुलिस द्वारा जबरदस्ती की जा रही थी। पुलिस ने मेरी चोटी उखाड़ दी, मेरे को बहुत मारा-धमकाया कि जो हम बोलें वह तुझे बोलना है। मेरे पास पेपर भी लाये कि तुम्हारे पास से हमें सीडी मिली है - ऐसा हस्ताक्षर करके स्वीकार करो। जबकि मेरे पास कोई सीडी नहीं है।'' डीसीपी अजय पाल लाम्बा ने भी स्वीकार किया : ''हमें कहीं से कोई भी सीडी, कोई मूवी या विडियो क्लिप बरामद नहीं हुई है। ये तथ्यहीन बातें हैं।''

मीडिया

''आश्रम में काला जादू होता है।''

सच्चाई

सीआईडी ने जाँच करने के बाद कहा : ''आश्रम में तांत्रिक विधि नहीं होती।'' सर्वोच्च न्यायालय ने दिनांक ९-११-१२ को दिये फैसले में इस प्रकार के सभी आरोपों को पूरी तरह खारिज कर दिया।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

निर्दोष पूज्य बापूजी के ऊपर लगाये गये बेबुनियाद, झूठे आरोपों से देश-विदेश में करोड़ों-करोड़ों हृदय पीड़ित हो रहे हैं । अन्न-जल त्याग के कारण कइयों को शारीरिक-मानसिक कष्ट भुगतना पड़ रहा है, कइयों की नींद छिन गयी है । बिकाऊ मीडिया द्वारा पूज्य बापूजी के बारे में कैसी भी अनर्गल बातें दिखायी जायें लेकिन साधकों व जागरूक देशवासियों की श्रद्धा पर इसका कोई प्रभाव पड़नेवाला नहीं है ।

देश-विदेश में हो रहे हैं जन-सत्याग्रह एवं विशाल संत-सम्मेलन